IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

# मैथिली नाट्य साहित्यमे बाढ़ि विमर्श

**डॉ. राज कुमार प्रसाद**

अध्यक्ष, मैथिली विभाग,

जनता कोशी महाविद्यालय, बिरौल, दरभंगा

**सारांश :**

मैथिलीमे नाट्य साहित्य एकटा सशक्त विधा मानल जाइत अछि । पौराणिक, ऐतिहासिक ओ समसामयिक विषय पर मैथिलीमे नाटक लिखल गेल अछि । समसामयिक विषय बाढ़िकेँ आधार बिंदु बनाकेँ सेहो मैथिलीमे नाटक लिखल गेल अछि, मुदा एकर संख्या कम अछि मुदा कथानक रोचक, प्रासंगिक ओ तर्कसंगत रहबाक कारणेँ विशिष्ट मानल जाइत अछि । बाढ़ि अतिवृष्टिक कारणेँ तँ अबिते अछि मुदा किछु ठीकेदार, अफसर, राजनेताक स्वार्थलोलुपताक कारणेँ सेहो बाढ़िक त्रासदीक उत्पन्न करबाक लेल जिम्मेदार मानल जाइत अछि । एहि सभ विषय–वस्तुकेँ नाटककार पात्रक माध्यमेँ एहि तरहेँ उपस्थापित करौने छथि जे दर्शक ओ पाठकेँ भावविह्वल कऽ दैत अछि संगहि एहिमे व्याप्त भ्रष्टाचार ओ भ्रष्टाचारीकेँ उजागर करैत, आमजनक संगहि शासन–प्रशासन, अधिकारी–पदाधिकारी सभकेँ साकांक्ष करैत अछि । व्याप्त भ्रष्टाचार परसँ पर्दा उठबैत अछि । आमजनक व्यथा–कथाकेँ उजागर करैत अछि ।

**बीज शब्द** : बाढ़ि विमर्श, समसामयिक विषय, नाट्य साहित्य

**प्रस्तावना** : मैथिली साहित्यमे जतेक विधा अछि ताहिमे नाट्य साहित्यक लेखन महत्त्वपूर्ण रहल अछि । नाट्य लेखन एकटा सशक्त विधाक रूपमे मैथिली साहित्य मध्य महत्त्वपूर्ण स्थान बना चुकल अछि । प्रारंभिक समयमे मैथिली गीतक प्रयोग मात्र संस्कृत नाटक मध्य होइत छल । कालान्तरमे विशुद्ध मैथिलीमे नाटक लिखल गेल । पौराणिक, ऐतिहासिक, सामाजिक नाटक प्रारंभमे लिखल जाइत छल, बादमे नाटकक कथानकमे समसामयिक विषयस्तुकेँ आधार बनाकेँ सेहो नाटक लिखल गेल । समसामयिक विषयमे बाढ़ि मिथिलांचलक अभिशापित समस्या अछि ताहुपर नाटक लिखल गेल । एकर संख्या अल्प रहितहुँ विशिष्टताक कारणेँ विशिष्ट अछि कियैक तँ एहिसँ प्रत्यक्ष ओ परोक्षरूपेँ मिथिलांचलक अधिकांश क्षेत्रहि नहि लोको प्रभावित होइत अछि ।

बाढ़िकेँ प्राकृतिक आपदा कहल जाइत अछि जे अतिविनाशकारी ओ प्रलंयकारी होइत अछि । बाढ़ि अतिवृष्टिक कारणेँ तँ अबिते अछि मुदा एहि आपदाकेँ रोकथामक लेल जे तटबंध, बाँध, पुल आदि बनाओल जाइत अछि ताहिमे भ्रष्टाचारक कारणेँ सही कार्य नहि हेबाक कारणेँ टुटि जाइत अछि । ढहि–ढनमना जाइत अछि । लोकक बसल–बसाओल घर–गृहस्थी, खेत–पथार आदि बाढ़िक धारामे दहि भसि जाइछ । एहन कारुणिक स्थितिक वर्णन नाटकक माध्यमेँ जे मंचित कयल जाइछ ओ प्रत्यक्षरूपेँ आनविधासँ अधिक प्रभावी होइत अछि ।

ओना ई बात सत्यो अछि जे दृश्य काव्य श्रव्य काव्यसँ अधिक प्रभावी मानल जाइत अछि । मानव जीवनक कतहु धर्म, कतहु विनोद, कतहु काम, कतहु हास्य, कतहु गाम कतहु समस्या कारण, परिणाम, निदान, आदिक तत्वक समग्र रूपेँ नाटकमे उपस्थापित कयल जाइछ ।

नाटकमे सभ तरहक दर्शकक मनोरंजन होइत अछि । नाटकक अतिरिक्त कोनो एहेन विधा नहि अछि जे विशाल जनसमूहकेँ एकहि समयमे सभक मनोरंजन कऽ सकय । तेँ तँ नाटकक सम्बन्धमे कहल जाइछ जे एहिमे धार्मिकक हेतु धर्म, कमोपवेसीक हेतु श्रृंगार, दुर्विनीतक हेतु संप्रम, विनीतक हेतु दमन क्रिया, शूर आ अभिमानीक हेतु उत्साह, नपुंसकक हेतु धैर्य देनिहार, अज्ञानीकेँ ज्ञान देनिहार, विज्ञजनकेँ विद्वता प्रदान केनिहार, दुःख पीड़ितक हेतु धैर्य, अर्थोपजीवीक हेतु अर्थ तथा उद्विग्न चितकेँ धैर्य प्रदान केनिहार एकमात्र नाटक होइत अछि । नाटक सुख–साधन, मनोविनोद तथा दुखी व्यक्तिक सेहो शान्त्वनादायक होइछ।

अर्थात् ई कही सकैत छी जे नाटक विश्वमानवक मानवलीलाक मानवजीवनक भाव–भावनाके प्रदर्शित कयनिहार एहन साहित्यिक विधा संगहि एहन विशाल रंगवेदिका थीक जाहि पर कोन एहन ज्ञान, कोन एहन विधा, कोन एहन कला आओर कोन एहन योग वा कर्म नहि जकर नाटकमे प्रदर्शन नहि होइछ । तेँ तँ अरुणाचार्य भवभूति नाटककेँ भव्यताक कारण मानैत छथि ।

नाटक काव्यकलाक एहन विधा थिक जाहिमे समस्त ललितकलाक वैशिष्ट्य एवं सभ कोटिक विषयक समावेश भऽ सकैछ । भरतमुनिक उक्ति छनि–

''सर्वशास्त्राणि शिल्पानि क्रमाणि विविधानि च ।''

एवं

''धर्माधर्म पवृतानां कामः कामोपसेविनम् ।''

तेँ नाटके एकटा एहेन विधा अछि जकरा Secular Art क उपाधि देल जा सकैछ ।

साहित्यिक जतेक विधा अछि ताहिमे नाटकक सबसँ अधिक लोकप्रियताक कारण छैक एकर रसास्वादन–सौकार्य । दृश्य काव्य अर्थात् नाटकमे सभ किदु प्रत्यक्ष रूपेँ मंच पर पात्रक माध्यमेँ घटित

घटनाकेँ देखलासँ पंडित, मूर्ख, सभक हृदय अनुरंजित होइछ । विभिन्न रुचिक लोक एहिसँ आनन्द प्राप्त करैत छथि । तेँ मालविकानिमित्रमेँ कालिदासक उक्ति छनि–

''नाटयं भिन्न रुचेर्ननस्य वहुधाण्येकं समाधारणम् ।''

अर्थात् नाट्याभिनय कलाक एहन विधान थिक, जाहिमे समस्त ललितकलाक यत्किंचित सन्निवेश एवं जाहि द्वारा सभ वर्गक लोकक मनोरंजन भऽ जाइछ ।

मैथिली साहित्यमे बाढ़िक त्रासदी कही वा प्राकृतिक आपदाक एकटा प्रवल कारक जाहिसँ प्रत्येक वर्ष मिथिलांचल अधिकांश हिस्सा प्रभावित होइत रहल अछि, मुदा एहि तात्कालिक कारण पर अल्पमात्रामे लिखल गेल अछि ताहुमे नाटकमे तँ आओर आँगुरे पर गिनबा योग्य । जे नाटक उपलब्ध अछि ताहिक विमर्श करब हमर ध्येय अछि ।

बहुविधा पर रचना कयनिहार मैथिली साहित्यक प्रसिद्ध साहित्यकार, मणिपद्मक नाटक 'झुमकी' अछि जे समाजमे पसरल सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक आदि विषमतासँ उपजल समाजसेवा, सर्वधर्मसमभाव, एवं परोपकारी भावनासँ महिला डकैत अछि । बाढ़िक समय सरकारी कर्मचारी, ठीकेदार ओ प्रबुद्धवर्ग निमग्न रहैत छथि ।एक दिस आमजन विपदामे काही काटैत रहैत अछि तँ दोसर दिस ठीकेदार, पदाधिकारी, जननेता, राजनेता आदि अपन–अपन झोड़ी भरवाक लेल आतुर उताहुल रहैत छथि । एहेन जे स्वार्थी वर्ग तकरा झुमकी दंडित करैत अछि एकरे एहिमे दृष्टांकन कयल गेल अछि–

इन्जीनियर : आउ लोचन, आउ ! अहींक बाट तकै छलहुँ । किछु अप्पन बाढ़िक खबरि कहब कि नहि ?

लोचन : खबरि तँ अपूर्व अछि सरकार ! ऐ बाढ़िक एकहक हिलकोर सोनाक हिलकोर थिक । बान्हमे दै ले, पचास हजार सिमटीक बोरा ऐठाँ खसल छैक । बीस टाका प्रति बोराक दरसँ पचास हजार बोरा सिमटीक गहिकी आबि चुकल अछि। पाँच लाख टाका एखनहि सरकारक समक्ष गनि देत । हमरो दू अने बोरा फराक सँ देत । तेँ अपनो जोगाड़ बैसा लेलहुँ ।

इन्जीनियर : ओह ! ऐमेसँ बहुतोकेँ शेयर देबउ पड़तैक लोचन ! नीक कयल, नीक कयल । वस्तुक डिलेवरी दऽ देलिए ?

लोचन : (मगन होइत) ओह ! ऐ बाढ़िमे बड़–बड़ गुण । टाका लेल आ गहकीक नाह पर बोरा लदबा देलिऐ । आब ई नाह राता–राती नेपालक सीमा पार कऽ जयतै । ने मूस, ने मूसक नाड़रिए । हँ, एत्ते करैक अछि जे राता–राती ऐ बान्हमे पाँच ठाँ क्रैक करबा कऽ पुनः ओकरा माटिसँ भरबा दैक अछि । अपने लिखि देबै जे पाँचटा क्रैकमे पच्चीस हजार बोरा सिमटी लागि गेलै । भरि राति हजार–हजार श्रमिक अपन प्राण हाथमे लऽ कऽ बाढ़िक हिलकोरसँ संघर्ष करैत रहल तखन ई केराक भालरि जकाँ थरथराइत बान्ह थीर भऽ सकल । जा–जा सरकार पहिने ई पाँच लाख टाका गनि लिओ । पाँच लाख टाका किछु कहबै छै सरकार !

(नेपथ्यसँ धराम–धड़ाम धड़िस आवाज । स्टेजपर अन्हार पसरि जाइत छैक । पुनः तेज टार्च सभहिक प्रकाश)

एकटा तेज आवाज : जेनरल शेरनी, समाजक असली क्रिमनलकेँ चीन्हि लिअऽ । हजार हजार जान, सैकड़ो गाम आ कोटि–कोटि मालकेँ संकटमे राखि कऽ ई स्मगलरक हाथेँ, पाँच लाखमे पच्चीस हजार बोरा सीमेन्ट बेचि लेलक । बाजू जेनरल, एक–एक बुलेट दूनुक करेजमे धसा दिऐ ?

जेनरल : ठमकि जो रोमर, ठमकि जो । एकरा सभकेँ जेल जाय दही जे जनता अपन जन–शत्रुकेँ चीन्हि सकय । जीबऽ दही जन–लांछनाक बीच । क्विक । टाका सम्हारि ले पाँचो लाख । क्विक क्विक क्विक ।

लोचन : दोहाइ कमला मैया, कोशी मैया, आ गंगा मैयाक । ह ह ह ह हम कुछ कुछ कुछ...

रोमर : जो सार, बाँचि गेलेँ दुनू ।

(स्टेज पर पुनः इजोत पसरि जाइत छैक)''[1]

एहि तरहेँ डकैत रहितो झुमकी समाजसेवा करैत समाजमे परिवर्त्तन आनै चाहै छथि । जनक्रांति जनहितमे चाहैत छथि । समाजमे ओ सरकारी महकमामे व्याप्त भ्रष्टाचारकेँ वेपर्द करै चाहै छथि । अपराधी व्यक्तिकेँ दंडित करऽ चाहै छथि । हुनका आशा छनि जे एकदिन दुराचारी, भ्रष्टाचारी, घुसखोरक अंत होयत । समाजमे नव विहान आयत ।

स्वतंत्र्योत्तर मैथिली साहित्यमे परिवर्तनक लहर आयल तथा साहित्यक प्रत्येक विधाक संग नाटक विधामे एकटा नवयुगक प्रारंभ भेल । सामाजिक समस्या दिन–प्रतिदिन बदलि रहल अछि, ताहि अनुरूपेँ नाट्य साहित्यक विषय–वस्तुक परिवर्त्तनक संगहि नवरूपेँ निर्माण करबामे नाटककार अग्रसर भेलाह ।

राजनैतिक, सामाजिक ओ तात्कालीन समस्यामूलक नाटककार मध्य रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'क नाम अग्रगण्य श्रेणीमे अबैत अछि । हिनक लोकनाट्य पर आधारित एकटा नाटक अछि 'लोक नाट्य जट–जटिन' जाहिमे मिथिलांचलक परम्परागत संस्कृतिक झलक देखबामे अबैत अछि ।

स्त्री प्रधान लोकधर्मी नाट्यरूपेँ मंचित 'जट–जटिन वस्तुतः ग्राम्य जीवनक गृहस्थीक एकटा लोकानुरंजन अलबम अछि । जट–जटिनक अभिनय आयोजन प्रधानतः वर्षाक निमित होइत अछि । एकर उद्देश्य होइत अछि ग्रीष्मातापसँ अकुलाइत प्यासल धरती पर अवस्थित जड़–चेतनकेँ बचेबाक लेल पानीक देवता मेघराज इन्द्रक स्तुति । मेघक संवाहक वेंगक मर्दन ओ सामूहिक नाट्यसँ आबद्ध अभिनयसँ वर्षाभिषेक

। भ्रमरजीक 'जट–जटिन : नाट्यरूप'मे अकालक समय पुरुषक हस्तक्षेपसँ मुक्त गामघरक स्त्रीगणक लोकधर्मी नृत्य ओ गायन नाट्य परम्पराक प्रतीक 'जट–जटिनक' प्रस्तुति मनोहारी अछि–

।। तीन ।।

(प्रकाश मध्यमंच पर केन्द्रित । स्त्रीगणक एकटा झुंड उखरिके ँ बीचमे राखि बेंग कुटबाक उपक्रममे लगैत छथि ।

समवेत गायन

''बरिसू बरिसू इन्नर देवता ।

पानि बिनु पड़ल अकाल हो लाल ।

चौर सुखले, चांचर सुखलै

सुखि गेलै बबाके जिराते हो लाल ।

– – – –

पानि बिनु पड़लै अकाले हो लाल ।

दयो नहि लगइ छौ हे इन्नर लोक

मयो नहि लगइ छौ हे इन्नर लोक

पानि बिनु पड़ल अकाले हो लाल ।

– – – –

निरसू के धिया पुता मांड ले कनइ छै

खुद्दी ले कनइ छै,

दयो नहि लगइ छौ हे इन्नर लोक,

पानि बिनु पड़ल अकाले हो लाल ।''[2]

जट जटिनक मादे डा. प्रफुल्ल कुमार सिंहक कहब छनि– '''जट–जटिन'क कथानक मिथिलांचलक ग्राम्य परिवारमे सृजित अछि । संवाद प्रश्नोत्तर शैलीमे, अभिनय एकल, युगल ओ सामूहिक, वेशभूषा सहजोपलब्ध, चरित विधान ग्राम्य परिवेशक अनुकूल, भाषाशैली काव्यात्मक मैथिली, उद्देश्य वर्षा हेतु मेघराज इन्द्रक स्तुति, लौकिक अभिचार एवं स्त्री लोकनिक एकांत लोकानुरंजन, रंगभूमि बंद घर–आंगन ओ

पेक्षक पुरुष हस्तक्षेपसँ मुक्त गामघरक स्त्रीगणक लोकधर्मी नृत्य नाट्य परम्पराक 'जट–जटिन'क चर्चित पक्ष अछि ।''

'बाढ़ि फेरो ओतैक' नाटिका कमलाकान्तक छनि । ई एकटा सामाजिक ओ बाढ़िसँ ग्रस्त–त्रस्त परिवारक व्यथा–कथा पर अवलम्बित अछि । एहिमे मिथिलांचलक जे बाढ़ि, सुखार, दहार ओ ओहिसँ उत्पन्न कारुणिक स्थिति तकर सफल चित्रांकन कयने छथि ।

सूपनबाहि वर्षा, नदीक बान्ह टूटबसँ लोकक कारुणिक स्थितिक मार्मिक चित्रण एहि नाटिकामे सटीक ढंगे भेल अछि–

''सुटना : बान्ह टूटि गेलै जानू । माय गै, आब की करबै ?

मङली : हँ रे बौआ, आब तऽ गामे दहा जेतै । कोनो साल रौदी जान मारै छै तऽ कोनो साल दाही । भगवानोक लीला अपरम्पार छनि । (विकल्ता सँ हड़बड़ाइत) दैबा रे दैबा ...। आब की करबे रे देबा... ! घरोमे पानि ढुकि गेलै हो लोक सब... । हे भगवान, आब तऽ घर–आंङन सभ दहा जेतै । चल चल रे बौआ सब चल कतौ ऊँचका पर जल्दी । (बिलटीकेँ कोरामे लेने तथा सुटनाकेँ हाथ पकड़ने मङली आर्त्तनाद करैत प्रस्थान करैत अछि। एकबेर धड़फड़ाकऽ खसैत अछि, फेर उठि बिदा होइत अछि । नेपथ्यसँ सेहो मङलीक आर्त्तनाद सुनना जाइत अछि । दैबारे दैबा चारुभाग पानि घेरि लेलक देबा...। आब किमहर जाउ देबा... । लोक सभ हौ लोकसभ...। हमर बच्चा सभकेँ बचाबऽ हौ लोकसभ...।[3]

बाढ़िक समस्या मिथिलांचलक लेल विकट अछि । बाढ़िक कारण एकटा प्रकृति प्रदत अतिवृष्टि तँ दोसर कारण के छथि तकर उद्‌बोधन पात्रक माध्यमे नाटककार करौने छथि जे तथ्यपरक ओ तर्कसंगत अछि–

''बेचन जी : भाइ, हमर गामक मुखियाजी सन सन नेता यदि देशमे रहत तँ बाढ़ि फेरो ओतैक । सभ साल दूबेर–चारिबेर बान्ह टुटैत रहतै । तटबन्धक मरम्मति पर लाखक लालख टाकाक बिल प्रतिवर्ष पास होत अछि, किन्तु एकहु पथिया माटि कोनो साल पड़ैत नहि देखैत छियै । ठीकेदार सँ लऽ कऽ ऊपर धरि चुप्पेचाप बाँट–बखरा भऽ जाइत छैक, लोककेँ गन्धतक नहि लगैत छैक ।''[4]

डॉ. अरविन्द 'अक्कू'क नाम मैथिली नाटककारक मध्य विशिष्ट स्थान छनि । हिनक नाटक 'झिझिर कोना' मे ग्रामीण स्तर पर पसरल भ्रष्टाचार ओ शोषण विरूद्ध तीव्र प्रहार कयल गेल अछि । पंचायत स्तर पर व्याप्त अराजक स्थितिक संगहि बाढ़िमे व्याप्त भ्रष्टाचार केँ उजागर कयल गेल अछि–

''पहिल अंक, पहिल दृश्य

गोपिया : (उदास होइत) सैह तँ सोचै छी जे आब की करी । परूकाँ साल बाढ़िएमे सभटा दहा गेलै आ ऐ साल रौदिए खा गेलै । जेहो सरकार खैरात पठौलकै सेहो हाकिम आ मुखिया सभ मिलि क' खा गेलै । आब त' पेटो चलनाइ कठिन बुझाइ हइ ।''[5]

निष्कर्ष : प्राकृतिक आपदा पर नाटक अल्प मात्रामे लिखल गेल रहितहुँ, अपन विशिष्ट कथानकक कारणे ँ विशिष्ट नाट्य साहित्य मध्य बहुचर्चित ओ प्रशंसित अछि । नाटकक कथानक जनसमस्याके ँ तँ उजागर करते अछि संगहि ओहि कारण सभ पर जनसमान्यक संगहि शासन–प्रशासनक ध्यान आकृष्ट करैत भ्रष्टाचारी, घुसखोरक, चेहरा परसँ पर्दा उठबैत अछि ।

संदर्भ सूची :

1. मणिपद्म, श्री 1977, झुमकी, मैथिली अकादमी, श्रीकृष्णपुरी, पटना, पृ. 14–16
2. 'भ्रमर' राम भरोस कापड़ि, 2007, 'लोक नाट्य जट–जटिन', अभिनय प्रकाशन, इन्द्रपुरी, पटना, पृ. 47–48
3. झा, कमलाकान्त, 2000, बाढ़ि फेरो ओतैक (मैथिली नाटिकत्रयी) नवारम्भ, मधुबनी : श्री भवन वार्ड नं. 02, निकट राम जानकी मंदिर बिहार, पटना, 63, एम.आइ.जी. हनुमाननगर, पृ. 10–11
4. तत्रैव, पृ. 17–18
5. अक्कू, डा. अरविन्द, 2011, 'झिझिर कोना', चेतना समिति, पटना, पृ. 12